प्रतिवेदन

स्थायी समिति की बैठक, दिनाँक 06 अक्टूबर 2008

विषय— शिक्षा स्थायी समिति की बैठक
दिनांक— 06 अक्टूबर 2008
स्थान— राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर

बैठक का उद्देश्य (एजेण्डा)— चेतना विकास मूल्य शिक्षा के पाठ्यक्रम का शिक्षा स्थायी समिति द्वारा अनुमोदन प्राप्त कर इसे कक्षा 1–10 तक सहायक वाचक के रूप में सम्मिलित किये जाने हेतु समिति की अनुमति बाबत् बैठक का आयोजन किया गया ।

बैठक में उपस्थित सदस्य–

अध्यक्ष– श्री सच्चिदानंद जोशी, कुलपति, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता वि.वि., रायपुर
सचिव– श्री नंदकुमार, सचिव, स्कूल शिक्षा विभाग छ.ग.शासन एंव संचालक रा.शै.अनु. एवं प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर
श्री सुभाष मिश्रा,महाप्रबंधक, छ.ग.पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर
श्री रमेन्द्रनाथ मिश्र, सदस्य, छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग, रायपुर
डॉ. श्याम सुन्दर मिश्र, श्री एस.के. ठाकुर, डॉ. निरूपमा शर्मा, डॉ. प्रफुल्ल शर्मा
श्री सूर्य कुमार पान्डेय– प्राचार्य, करूणा वर्मा–लोक शिक्षण संचालनालय, रायपुर,
श्री पी.के. पान्डेय–छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल रायपुर,
श्री सोम त्यागी, श्री अंजनी कुमार अभ्युदय संस्थान अछोटी, दुर्ग,
श्री एन.पी.कौशिक, संयुक्त संचालक, रा.शै.अनु.एवं प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर,
श्रीमती ए. कुजूर, संयुक्त संचालक, रा.शै.अनु.एवं प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर,
श्रीमती एस.एन. अली, श्रीमती वंदना अग्रवाल, शा.शिक्षा महाविद्यालय रायपुर,
श्रीमती अनुपमा नलगुण्डवार, श्री बी.आर.साहू, नीलम अरोरा एस.सी.ई.आर.टी. रायपुर।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा के पाठ्यक्रम को स्कूल शिक्षा में सहायक वाचक के रूप में कक्षा 1–10 तक सम्मिलित किया जाना प्रस्तावित हैं। आज की बैठक इसी उद्देश्य से रखी गयी हैं। बैठक शिक्षा स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री सच्चिदानंद जोशी जी, कुलपति, कुशाभाऊठाकरे पत्रकारिता वि.वि. रायपुर की अनुमति से प्रारंभ हुई। चेतना विकास मूल्य शिक्षा का स्त्रोत मध्यस्थ दर्शन यह अस्तित्ववाद है, जिसके प्रणेता श्री ए. नागराज हैं। धरती पर मूल रूप से चार अवस्थाएँ पदार्थ (पदार्थ अवस्था), पेड–पौधे (प्राण अवस्था), जीव (जीव अवस्था), मनुष्य (ज्ञान अवस्था) हैं। मानव के अलावा शेष तीनों अवस्थाओं में हर इकाई का आचरण निश्चित हैं। अर्थात् हर इकाई स्वयं में व्यवस्था है और समग्र व्यवस्था में भागीदार हैं। मानव भी व्यवस्था में जीना चाहता हैं। लेकिन प्राकृतिक रूप से मानव कैसा है प्रकृति कैसी है, और प्राकृतिक व्यवस्था को समझ न पाने के कारण अव्यवस्थित होकर जीने के लिए बाध्य हैं। यही

मानव का अनिश्चित आचरण हैं। इससे ही कई प्रश्न उभरते है, जिनमें से कुछ हैं–
–क्या प्रचलित शिक्षा के बढ़ने के साथ–साथ मानव की सम्बंधों में तालमेल पूर्वक जीने की योग्यता बढ़ी है?
–क्या हम प्रकृति के साथ तालमेल पूर्वक जी रहे हैं?
–बच्चें को कितनी भी मंहगी विद्यालयीन शिक्षा देने के बाद भी क्या हम सुनिश्चित हो सकते है, कि भविष्य में हमारे बच्चों से हमारे सम्बंध सुखद होंगे?

ग्लोबल वार्मिंग में शिक्षितों का योगदान अधिक हैं या अशिक्षितों का। शिक्षा के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ राजनीति, धर्मनीति, आर्थिक, शैक्षणिक, स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति आम आदमी का विश्वास बढ़ रहा है या घट रहा हैं?

सभी समस्याओं का व्यावहारिक समाधान चेतना विकास मूल्य शिक्षा से संभव हैं। कोई भी मानव मूल रूप में गलती करना नहीं चाहता है जीव चेतना वश भ्रमित विधि से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के कम में गलती करना हैं। यही समस्त समस्याओं का कारण हैं मानव चेतना विधि से हर मानव समाधान (सुख) एवं समृद्धि पूर्वक जी सकता है।

इस प्रकार जीव चेतना से मानव चेतना में संक्रमण ही चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम का लक्ष्य हैं।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा, कार्यक्रम मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रस्तावित निम्नलिखित आधारभूत शर्तों को पूरा करता हैं–

1 **पाठ्यक्रम दर्शन आधारित हैं। सार्वभौम मानवीय मूल्यों को व्याख्यान्वित करता हैं।**
2 **पाठ्यक्रम किसी भो प्रकार के अंधविश्वास, कर्मकाण्ड, पूजन पद्धति से सर्वथा मुक्त हैं। किसी भी प्रकार के सम्प्रदायवाद एवं रहस्यवाद से मुक्त हैं।**
3 **पाठ्यक्रम तर्क आधारित हैं। प्रतिभागी तर्कपूर्ण ढंग से इसका प्रयोगों एवं विश्लेषण द्वारा परीक्षण कर सकते हैं।**
4 **इसके अध्ययन के लिए पुस्तकें उपलब्ध हैं।**
5 **इसे कार्य–व्यवहार में लाकर इसका परीक्षण किया जा सकता हैं।**

बैठक में चेतना विकास मूल्य शिक्षा अभ्युदय संस्थान, के सदस्य श्री सोम ने इस पर प्रकाश डालते हुए कहा–

जब आचरण की बात होती है, जीवन शैली की बात होती है तब 4 बातें सामने आती हैं – सार्वभौम मानवीय आचरण– ऐसा आचरण जो सभी के द्वारा स्वीकार्य हो।
– सार्वभौम मानवीय शिक्षा– आचरण को सार्थक करने के लिए शिक्षा।
– सार्वभौम मानवीय व्यवस्था– सार्वभौम मानवीय आचरण के लिए एक उचित व्यवस्था का होना नितान्त आवश्यक है।
– सार्वभौम मानवीय संविधान– उपरोक्त तीनों के लिए एक संविधान होना आवश्यक हैं। तभी परिवार से विश्व परिवार के जीने का मॉडल बनता है। इसके प्रति एक विशाल स्वीकृति बनी हैं। आप सभी छोटे रूप में इसे प्रयोग करे। शोध करे। निर्णय ले। यह जीवन के अनुकूल है या नहीं।

समिति के सदस्य डॉ. त्रिपाठी के अनुसार सिर्फ किताबों में इसे देने से काम नहीं चलेगा, आचरण में इसे उतारना होगा। मूल्य शिक्षा से संबंधित बातें अभी भी किताबों में हैं। इसे आचरण में लाने के लिए प्रयास करना होगा। इसके लिए Integrated Approach की जरूरत होगी। इसे मुख्य धारा लाना चाहिए। अध्यक्ष महोदय के अनुसार यह विषय मेरी रूचि का हैं। इसके लिए सक्षम शिक्षक तैयार करने होगें।

सचिव महोदय– चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रति सर्व सहमति बनी हैं। सभी ने इसे स्वीकार किया हैं। देर सवेर इसे शिक्षा में लाना ही हैं। हमारा राज्य नेतृत्व क्यों न करें? जहॉ तक इसे मुख्य धारा में लाने की बात हैं, हमारे किताबों की परिभाषाएँ और इनकी परिभाषाओं में कुछ भिन्नता हैं। मुख्य धारा में इसे सीधे लाने पर कुछ भ्रम की स्थिति हो सकती हैं। जब चेतना विकास मूल्य शिक्षा की किताबें लिखी जावेगी तब उनमें इस स्थिति को स्पष्ट किया जायेगा।

महाप्रबंधक पाठ्यपुस्तक निगम– श्री सुभाष मिश्र के अनुसार चेतना विकास मूल्य शिक्षा का पाठ्यक्रम मैंने पढ़ा यह बहुत कठिन हैं । इसे communicable और सरल बनाना होगा । समिति के उपस्थित सभी सदस्य श्री सूर्य कुमार पान्डेय, श्री पी.के. पान्डेय, श्री एस.के. ठाकुर, प्रो. रमेन्द्रनाथ मिश्र, डॉ. निरूपमा शर्मा, डॉ. प्रफुल्ल शर्मा, करूणा वर्मा ने सकारात्मक रूख व्यक्त किया। इसे सहायक वाचन के रूप में कक्षा 1–10 तक सम्मिलित करने पर अपनी सहमति देते हुए कहा– यह Cognitive Level पर हैं, इसमे Learning Experiences जोड़ने होगें, रामझ के स्तर पर कैसे जाये, मूल्यांकन कैसा हो इस पर विस्तार से सोचा जाए, इसकी किताबें प्रारंभिक स्क्रीप्ट सरल, सहज व ग्राह्य हो। अंत में अध्यक्ष महोदय के अनुसार Basic content आपके पास हैं, शिक्षा परिवारोन्मुखी, समाजान्मुखी बनें, इस पर व्यापक स्वीकृति बन गई है। अब हमें निजता से व्यापकता की ओर चलना चाहिए।

पाठ्यक्रम के अवलोकन एवं चर्चा के पश्चात् समिति ने चेतना विकास मूल्य शिक्षा के पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन के संबंध में सरलीकृत करने का सुझाव देते हुए पाठ्यक्रम का अनुमोदन किया तथा कक्षा 1 से 10 तक सहायक वाचक के रूप में सम्मिलित करने के प्रति अपनी स्वीकृति प्रदान की ।

प्र0 सा0 शि0 (प्रशि0) 21/10

छत्तीसगढ़ शासन
स्कूल शिक्षा विभाग
मंत्रालय,
दाऊ कल्याण सिंह भवन रायपुर

===0===

//आदेश//

रायपुर, दिनांक 14.10.2008

क्रमांक एफ 1–75/2008/20–एक :: राज्य शासन एतद् द्वारा चेतना विकास मूल्य शिक्षा के पाठ्यक्रम का शिक्षा स्थायी समिति द्वारा अनुमोदित अनुसार कक्षा 1–10 के सहायक वाचन के रूप में सम्मिलित किये जाने की स्वीकृति प्रदान की जाती है ।

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल के नाम से
तथा आदेशानुसार

(बिबियाना तिर्की)
अवर सचिव
छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग

रायपुर, दिनांक 14.10.2008

पृ. क्रमांक एफ 1–75/2008/20–एक

प्रतिलिपि :–

1. निज सचिव, माननीय मंत्रीजी, छ0ग0शासन, स्कूल शिक्षा विभाग, मंत्रालय,रायपुर,
2. सचिव, छ0ग0शासन, स्कूल शिक्षा विभाग, मंत्रालय, रायपुर,
3. आयुक्त, लोक शिक्षण संचालनालय छत्तीसगढ़, रायपुर,
4. संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद रायपुर,
5. सचिव, छ0ग0 माध्यमिक शिक्षा मण्डल रायपुर,
6. महाप्रबंधक, छ0ग0 पाठ्यपुस्तक निगम रायपुर,
7. गार्ड फाईल,

की ओर सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु अग्रेषित ।

B. Tirkey 14.10.08
अवर सचिव
छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग

आवक क्रमांक 10116
दिनांक 21.10.08